# उपसंहार

मिथक, एक ऐसा ज्ञान भण्डार है, जो किसी भी देश की संस्कृति, ब्रह्मांड या मूल्यों की उत्पत्ति को समझाने का प्रयास करती है। मिथक के अर्थ में परिवर्तन आते गए और अब यह उन गाथाओं का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे एक विशेष वर्ग या संस्कृति सत्य मानती है। ब्रह्मांड की उत्पत्ति जैसी प्राकृतिक घटनाओं को अमानुषिक एवं अलौकिक प्रक्रियाओं के ज़रिए व्याख्या देने का प्रयत्न करते हैं। प्राचीन मिथक यथार्थ से अधिक कल्पना एवं अंतर्ज्ञान के निकट है।

मिथक दिव्य प्राणियों की सुव्यवस्थित प्रणाली है, जो पारंपरिक रूप से पारित किया जाता है। इसका किसी शासक या पुजारियों के द्वारा समर्थन होता है और यह किसी समुदाय के आध्यात्मिक या धार्मिक जीवन से जुड़े होते हैं। जब समाज के आध्यात्मिक नेतृत्व का यह संबंध टूट जाने पर पौराणिक कथाओं से लोक कथाओं में परिवर्तित हो जाते हैं। मिथक का किसी प्रमाण के द्वारा समर्थन न होने के कारण उसे खारिज कर देने की रवैया आज हमें देखने को मिलता है किंतु मिथकीय कहानियों में निहित मूल्य एवं सीख को कोई भी खारिज नहीं कर सकता।

मनुष्य द्वारा सभ्यता के प्राप्त करने के पश्चात भी मिथकों का कई तरीकों से प्रयोग करता रहा। जैसे मानव जाति को प्राकृतिक घटनाएँ जैसे फसल उपजना एवं ऋतुओं का परिवर्तन और आपदाएँ जैसे भूकंप या तूफान के लिए एक स्पष्ट व्याख्या प्रदान। जन्म और मृत्यु जैसे जीवन की घटनाओं के संबंध में मिथक ने जवाब दिया। मनोरंजन के लिए भी इसका प्रयोग होता था। किंतु इन सभी में ब्रह्मांड निर्माण के लिए मिथक ने जो स्पष्टीकरण दिया है वह सबसे महत्वपूर्ण है। एक अज्ञान जनता जो अपने जीवन और प्रकृति संबंधित उत्तर की तलाश में थे, उनको एक जवाब दिया है, उसकी चारों ओर क्या हो रहा था इस बात की समझ को हासिल करने के लिए मिथक ने उनके लिए एक संरचना तैयार किया।

हिंदू मिथक आज भी उतनी ही प्रसिद्ध है, जितने कि वह पहले ज़माने में हुआ करते थे और भारतीय साहित्य की एक हिस्से के रूप में शामिल है। समकालीन समाज, हिंदू पौराणिक कथाओं में जो बताया गया है, उसे एक अलग दृष्टिकोण से अपनाता हैं। इसीलिए उन रचनाओं को हिंदी मिथकीय साहित्य के पावन एवं पुनीत रचनाओं के रूप में देखने की मनोवृत्ती कम होने लगा है। उनमें तरह-तरह की रचनात्मक व्याख्याएँ होने के साथ-साथ उन

कहानियों का विश्लेषण भी किया जाता है। ऐसे महाकाव्यों को इस प्रकार पुनर्लेखन किया जाता है कि उसके पात्रों की दैविक चेतना कम और मानवीय गुण ज़्यादा दिखे। इसके हर एक पात्र हर छोटे-बड़े मानवीय भावनाओं और जज़्बातों को महसूस करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि इनके संघर्ष और लड़ाई हमेशा किसी मुख्य या बड़े उद्देश्य से प्रेरित हो । मिथक को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का तरीका बदल गया है क्योंकि इन कथाओं का पुनः कथन एवं इन पात्रों का सार्वभौमिक यात्रा किसी एक व्यक्ति के दृष्टिकोण के माध्यम से होता है। इसमें ईश्वर के मानवीय पक्ष बाहर लिया है जिससे पाठक नए तरीकों से ईश्वर से संबंध महसूस कर सकते हैं । इनमें पात्रों की आलोचना है एवं उन पर छानबीन किया जाता है । समकालीन विचारधारा एवं मुद्दों के साथ जोड़कर उन कहानियों पर सवाल उठाया जाता है।

नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी ने मिथक का पुनः सृजन कर भारतीय कथा साहित्य में अपने लिए एक दृढ़ स्थान स्थापित किया है । प्रारंभिक भारतीय लेखकों द्वारा बनाए गए मिथकों के पारंपरिक रीतियों को उन्होंने तोड़ दिए हैं। समकालीन समाज में क्रांति लाने की आशा में कोहली जी एवं अमीश जी ने पौराणिक कथाओं को क्रांतिकारी विचारों के साथ प्रस्तुत किया है। दोनों लेखकों ने एक आदर्श समाज की स्थापना को लक्ष्य बनाकर जनता के लिए उपयुक्त आधुनिक मिथक की सृष्टि किया है, जो पारंपरिक भी है और वैज्ञानिक एवं प्रासंगिक भी।

नरेंद्र कोहली एक ऐसे लेखक थे जिन्होंने अपनी मिथकीय रचनाओं से हिंदी साहित्य में ऐसा छाप छोड़े हैं, जिसके कारण उन्हें आधुनिक राम कथा के सर्वश्रेष्ठ उन्नायक और आधुनिक तुलसीदास कहा जाता है। आचार्य चतुर्सेन के उत्तम शासन की उदाहरण को दिखाने के लिए रावण को चुना, तो कोहली जी ने इसके लिए राम को उचित समझा। उनकी लेखन के ज़रिए रामायण के पौराणिक पात्रों, तत्वों, घटनाओं और विचारों को एक नया आयाम मिला। साहित्य में अंतर्निहित जो मिथक के वह अनुभवों का विश्लेषण करता है और कोहली जी की सफलता भी इसी बात पर निर्भर था।

अंग्रेजी भाषा में लेखन कार्य करने वाले अमीश त्रिपाठी एक समकालीन भारतीय लेखक हैं जिन्होंने भारतीय मिथक को अंतरराष्ट्रीय स्तर में ख्याति दिलाया। उनके उपन्यासों की बिक्री लाखों में होता है जो इस बात का सबूत है कि भारतीय पौराणिक कथाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी सदियों पहले थी अंतर सिर्फ इतना है कि इसको प्रस्तुत करने की शैली बदल रही हैं।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने भारतीय मिथक के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है । दोनों लेखकों ने रामायण का समसमायिक चित्रण कर समकालीन विश्व में पौराणिक कथाओं की प्रासंगिकता को वापस ले आए हैं ।

मैंने अपने शोध कार्य में नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित राम कथा श्रृंखला का तुलनात्मक अध्ययन किया है । इनकी तुलना करने के बाद में इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि दोनों लेखकों के राम कथा श्रृंखला के प्रकाशन के बीच बहुत बड़ी समय अंतराल है । इसके बावजूद भी इनमें आश्चर्यजनक रूप से समानताएँ पायी जाती हैं । इसमें कई सूक्ष्म अंतर भी हैं जैसे -

- ❖ अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला में विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच जो शत्रुता है, इसका प्रभाव अन्य पात्रों के जीवन पर भी पड़ता है, किंतु कोहली जी की अभ्युदय में इसका केवल एक प्रसंग में उल्लेख हुआ है । विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच जो मतभेद है, वह किसी पात्र के चरित्र पर या कथा की प्रवाह पर किसी तरह का प्रभाव नहीं डालता।
- ❖ कोहली जी एवं अमीश जी ने रामायण के पात्रों के बीच के संबंध को अलग रूप से देखा है । कोहली जी के लक्ष्मण अपने भाई भरत पर भरोसा नहीं कर पाता, वह दूसरी तरफ अमीश जी की राम कथा में रावण और सीता के बीच भी अंत में मित्रता की भावना जागती है ।
- ❖ नरेंद्र कोहली ने कहीं भी पुष्पक विमान का उल्लेख नहीं किया और अमीश जी ने पुष्पक विमान जैसा जादुई तत्व को हटाकर वैज्ञानिक रूप से समझाया है । इन दोनों के यह दृष्टिकोण आज की पीढ़ी के साथ मेल खाता है ।
- ❖ राम का चित्रण सिर्फ धैर्यवान पात्र के रूप में नहीं हुआ है, उनके भावनात्मक पक्ष को भी दिखाया है । सीता को एक मज़बूत स्त्री पात्र के रूप में दिखाया है जो कोहली जी की राम कथा में इंद्र पुत्र जयंत से आत्मरक्षा के लिए अकेली लडती है, अमीश जी के राम कथा में एक देश को संभालती हुई राजनीतज्ञ के रूप में चित्रित हुआ है जो आधुनिक महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक छवि का प्रतिनिधित्व करती है । अमीश जी ने खलनायक रावण को भी, बल्कि एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में दिखाया है, जो आज की दुनिया के लिए एक सबक पेश करता है ।
- ❖ नरेंद्र कोहली ने राम को एक ऐसे राजकुमार के रूप में चित्रित किया है जो उत्पीड़ित जनता, श्रमिक वर्ग और प्रताड़ित दलित महिलाओं की अधिकार उनकी स्वतंत्रता और बेहतर जीवन स्थितियों के लिए लड़ते हैं । दूसरी ओर, अमीश त्रिपाठी के

राम, अपराध विभाग की उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लेते हैं। कानून और व्यवस्था को सख्ती से लागू करने के माध्यम से अयोध्या में अपराध दर को काफी कम करते हैं, जिससे अयोध्या में शाँति और संतुष्टि आती है ।

- ❖ अमीश त्रिपाठी के रावण एक बच्ची को वेश्यावृत्ति में धकेले जाने से बचाते है, जो रामायण कथा में एक नया आयाम जोड़ता है । यह चित्रण रावण के मानवीय पहलू को उजागर करता है, जिसे पारंपरिक रूप से भारतीय महाकाव्यों में एक सकारात्मक पात्र के रूप में दर्शाया गया है । यौन शोषण जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ उनके रुख को प्रदर्शित करके, अमीश जी इस प्रतिष्ठित चरित्र पर एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो खलनायक के रूप में उनके सामान्य चित्रण से परे हैं ।
- ❖ नरेंद्र कोहली की रामायण प्रस्तुति में, सीता की बहन और लक्ष्मण की पत्नी, उर्मिला का उल्लेख नहीं हुआ है। कोहली जी का लक्ष्य संभवत: लक्ष्मण के चौदह साल के जंगल में वनवास के दौरान अयोध्या में अपना जीवन छोड़ने के अतिरिक्त बोझ या अपराध बोध के बिना सेवा करने के समर्पण को चित्रित करना था।

नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी ने परिचित पत्र को नहीं आख्यानों में प्रस्तुत कर एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। इसके साथ ही वह प्रचलित मानदंडों को चुनौती देते हुए जाति और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव जैसे सामाजिक मुद्दों को भी संबोधित करते हैं । इन उपन्यासों की लोकप्रियता एवं स्वीकार्यता और लेखकों को 'आधुनिक तुलसीदास' एवं 'लिटरेरी पॉपस्टार' के रूप से नामित किया जाना स्वयं इस बात का प्रमाण है कि मिथक की पुनः कथन करने की प्रवृत्ति प्रचलित हो रही है। इन लेखकों का लक्ष्य प्राचीन ग्रंथो के भीतर समृद्ध ज्ञान को पहचानते हुए भारतीय मिथकों को पुनर्जीवित करना था। वे इन ग्रंथों की बहुआयामी और बहुभाषी प्रगति को उजागर करना एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में देखा जो भारतीय संस्कृति के वास्तविक सार को समझने में एक नई चुनौती पेश करता है।

रामायण के हर पात्रों के चरित्र हमें कुछ न कुछ सबक देते हैं। वाल्मीकि जी के रामायण हमें यह सिखाते हैं कि राम जैसे पूजनीय व्यक्ति में भी खामियाँ हो सकती हैं। इसके बावजूद, राम शाँत रहते हैं, कभी निराशा के आगे नहीं झुकते या भाग्य को दोष नहीं देते। सीता एक साहसी महिला के रूप में उभरती हैं, जो एक कर्तव्यपरायण पत्नी के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए महल के आराम को स्वेच्छा से त्याग देती है, और रावण द्वारा अपहरण किए जाने पर धैर्यपूर्वक अपनी आत्मरक्षा करती है ।

लेखकों के अनुसार राम, सीता, हनुमान और अन्य देवताओं को मानव के रूप में और उनकी उपलब्धियों को भी प्राकृतिक शक्तियों के बजाय मानवीय क्षमताओं के रूप में देखा जा सकता है।पौराणिक कथाओं को कथा के रूप में नहीं, बल्कि भूतपूर्व अनुभवों के प्रमाण के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसे पुनः देखा और पुनर्व्याख्यान किया जा सकता है, जो बदल सकता है। पौराणिक, कथा समय के साथ बदली जाती है और अमीश जी और कोहली जी जैसे लेखक समय के अनुरूप इसका परिवर्तन करते हैं। अंत में हम यह कह सकते है कि दोनों लेखकों की राम कथा श्रंखला, मिथक और साहित्य के बीच संबंध स्थापित करने में एक आदर्श उदाहरण हैं।

भारत की आध्यात्मिकता और दर्शन में निहित सांस्कृतिक विरासत का सार, भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण नींव रखता है । पौराणिक संतों की विरासत, आत्मा की अमरता में विश्वास और गहरी धार्मिक और दार्शनिक समझ इसका मूल है । जैसा कि हम एक आशाजनक भविष्य के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यह ज़रूरी है कि अतीत की उपेक्षा न करें, क्योंकि यह हमारे कल को आकार देता है । दुख की बात है कि प्रगति की हमारी खोज में, सांस्कृतिक विरासत के महत्व को अक्सर भविष्य के बारे में चर्चाओं में नजरअंदाज कर दिया जाता है, चाहे वह आर्थिक संदर्भ में हो या सामाजिक संदर्भ में। इन सांस्कृतिक जड़ों को संरक्षित करना और उन्हें अगली पीढ़ियों तक सुरक्षित रूप से एक उत्तरदायित्व है, जिसे नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने निभाया है ।

दुनिया में कुछ ही ऐसे लेखन कार्य होते है जो सार्वभौमिक रूप से लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। जब कोई साहित्यिक कार्य किसी एक भाषा क्षेत्र पर ही सफल होती हैं, तब भी यह लेखक के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है । किंतु जब पुस्तक का कई भाषाओं में अनुवाद किया जाता है और सार्वभौमिक रूप से इसका अध्यन होने लगता है, तो यह लेखक के लिए जीवन भर का पुरस्कार बन जाता है। ऐसे पुस्तकों को विश्व साहित्य की श्रेणी में रखा जाता है, वे सभी पीढ़ियों के लिए उपयुक्त है और सार्वभौमिक सार रखती है । विश्व साहित्य में कवियों को प्रेरित करने की क्षमता कुछ ही लेखकों में होती है । वे विभिन्न संस्कृतियों नैतिक मूल्य प्रदान करते हैं । वाल्मिकी, महान महाकाव्य रामायण की रचना करके उस सार्वभौमिक स्तर पर पहुँच गए है । ऐसा माना जाता है कि वह पूर्वोत्तर भारत में रहते थे। संत कवि बनने से पहले वह एक चोर थे। रामायण ही एकमात्र ऐसी कृति है जो उन्हें काव्य प्रतिभा बनाती है । वह नैतिक जीवन के प्रति शुद्ध एवं परिष्कृत विचार रखने वाले व्यक्ति बन जाते हैं ।

'धर्म' पर रामायण हमे जो शिक्षाएँ देती है वह आज की दुनिया में महत्वपूर्ण हैं जहाँ सफलता की निरंतर खोज में मूल्य अक्सर पीछे रह जाते हैं । कलियुग के इस भ्रष्ट युग में, पारिवारिक सम्मान में गिरावट आती है, और शिक्षक अपना पूजनीय दर्जा खो देते हैं । फिर भी, महाकाव्य का कालातीत ज्ञान हमें सामाजिक पवित्रता, पारिवारिक महत्व और व्यक्तिगत पहचान की ओर वापस ले जा सकता है । भारत की सांस्कृतिक विरासत सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व के लिए सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर गहराई से ज़ोर देना आवशयक है।

मूल्यों को समझने का सबसे आसान तरीका रामायण का अध्ययन करना है । बहुत से लोग महाकाव्य तो पढ़ते हैं, लेकिन कुछ ही लोग वास्तव में उनके अर्थ को समझते हैं । इन मूल्यों को सिर्फ जानना पर्याप्त नहीं है, हमें इनका पालन भी करना चाहिए। ज्ञान तभी उपयोगी होता है जब उसे वास्तविक जीवन में लागू किया जाए। आजकल, हम तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं लेकिन यह भूल जाते हैं कि मूल्यों का जीवन में क्या प्रभाव हो सकते हैं । राम और रावण दोनों ही ज्ञानी थे, लेकिन राम की महानता अपने ज्ञान को लागू करने से आई और रावण ऐसा करने में असफल रहे। इसलिए भविष्य के लिए रामायण के मूल्यों को याद रखना और उनके अनुसार जीना महत्वपूर्ण है ।

रामायण का स्थायी प्रभाव परंपराओं की शाश्वतता को दर्शाता है, जिसने पश्चिमी देशों में भी व्यापक प्रभाव डाला है । महात्मा गाँधी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महाकाव्य की प्रासंगिकता पर ज़ोर देते हुए 'रामराज्य' को लोकप्रिय बनाया। वाल्मिकी रामायण की प्रस्तुति में निहित कई राम कथा संस्करण मौजूद हैं, जिनमें से प्रत्येक संस्करण अपनी विशिष्टता जोड़ते हैं। रामचरितमानस 'राम' नाम की दिव्य प्रकृति से परे है जिसके जप मात्र से पाप धुल जाते हैं ।

रामायण को अपने जीवन का हिस्सा बनाने से तनाव और अवसाद भरे इस युग में शांति आ सकती है। सद्भाव के लिए राम एक अनुकरणीय आदर्श पात्र है। समकालीन समाज को रामायण में निहित धर्म की अवधारणा को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है । समय तीव्र गति से बदल रहा है, राम जैसे आज्ञाकारी चरित्र आज सुलभ नहीं है । आदर, कृतज्ञता, भक्ति आदि मनुष्य के अंदर कम होती जा रही है। मनुष्य की हृदय में प्यार एवं सम्मान की स्थान पर अपराध और द्वेष वास करता है। रामायण व्यक्ति का वास्तविक पहचान, परिवार को संस्कार और समाज को पवित्रता प्रदान कर सकती है। भ्रष्टाचार से भरी इस दौर में रामायण की शिक्षाएँ देना आवश्यक है। हमें रिश्तों की

अहमियत के बारे में विस्तार से सिखाती है । रामायण में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य समाहित है ।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण को समझने के लिए मैंने इनकी राम कथा श्रृंखला का सहारा लिया है । इनके साहित्य के आधार पर भविष्य में और भी शोध कार्य हो सकते हैं । जैसे -

1. नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी के मिथकीय उपन्यासों में धर्म - एक तुलनात्मक अध्ययन।
2. नरेंद्र कोहली की महासमर की समसामयिक महत्व का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
3. अमीश त्रिपाठी के शिव रचनात्रय और शिव पुराण का एक तुलनात्मक अध्ययन।
4. नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला में सामाजिक यथार्थ।
5. भारतीय भाषाओं की मिथकीय रचनाओं में तुलनात्मक अध्ययन।

मैं आशा करती हूँ कि मेरा शोध एक द्वार के रूप में काम करेगा जो कई संभावित शोध अध्ययनों को उजागर करने में सहायता करें, जो समकालीन दुनिया में रामायण के पुनः कथन के महत्व समाज को समझाये और यह सीख दे कि कैसे रामायण जीवन को गहराई से प्रभावित कर सकता है, जैसे इस शोध कार्य ने मेरे जीवन को प्रभावित किया है ।